विशेषण-

परिभाषा-**(1)वासुदेवनंदन प्रसाद-**

जो संज्ञा और विशेषण की विशेषता बताएँ उसे विशेषण कहते हैं।
(आ.हिंदी व्या. और रचना)

(2)कामताप्रसाद गुरु-

संज्ञा के अर्थ में विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
(संक्षिप्त हिंदी व्याकरण)

(3)उमेशचंन्द्र शुक्ल-

संज्ञा का गुण बताकर उसकी व्याप्ति मर्यादित करनेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं। (हिंदी व्याकरण)

जैसे-कृष्ण संज्ञा की काला कृष्ण में काला शब्द व्याप्ति मर्यादित करता है।

प्रकार-मूल दो प्रकार है-विकारी विशेषण , अविकारी विशेषण -

विकारी विशेषण-लिंग,वचन,पुरुष इत्यादि के कारण जिन विशेषण में परिवर्तन होता है वह सारे विशेषण विकारी है।

जैसे- काला घोड़ा , काली घोड़ी(लिंग)

अविकारी विशेषण- लिंग,वचन,पुरुष इत्यादि के कारणजिन विशेषण में परिवर्तन नहीं होता है वह सारे विशेषण अविकारी है।

जैसे-सुन्दर लड़की , सुन्दर लड़का(लिंग)

प्रयोग की दृष्टि से चार प्रकार हैं-

(1)सार्वनामिक विशेषण (2)गुणवाचक विशेषण (3)संख्यावाचक विशेषण(4)परिमाण बोधक

सार्वनामिक विशेषण-जो सर्वनाम शब्द की भाँति किसी संज्ञा की विशेषता बताए,उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।जैसे-

वह आदमी कुशल है।

कौन व्यक्ति जायेगा।

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम को छोड़कर शेष सभी सर्वनाम संज्ञा के साथ प्रयुक्त होकर सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं। जैसे-

(1)निश्चयवाचक-यह पेन, वह पेन,आदि।

(2)अनिश्चयवाचक-कोई पेन, कुछ लोग,आदि।

(3)प्रश्नवाचक- कौन व्यक्ति

(4)संबंधवाचक-जो पुस्तक, जैसी करनी वैसी भरनी आदि।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं–

(1)**मूलसार्वनामिक विशेषण**-जो सर्वनाम बिना किसी रूपांतरण के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, मूलसार्वनामिक विशेषण कहलाता है।जैसे-

वह आदमी कुशल है।

कौन व्यक्ति जायेगा।

(2)**यौगिकसार्वनामिक विशेषण**-जो सर्वनाम मूल सर्वनाम में प्रत्यय आदि जुड़ जाने से विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, यौगिकसार्वनामिक विशेषण कहलाता है।जैसे-

ऐसा आदमी नहीं मिलेगा।

जैसी करनी वैसी भरनी आदि।

गुणवाचक विशेषण-जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण,रूप,रंग आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक(कोई भी विशेषता) विशषण कहते हैं।जैसे-

बाग़ में सुन्दर फुल है।

अच्छे बच्चे बड़ों का आदर करते हैं।

इसमें सुन्दर तथा अच्छे गुण वाचक विशेषण है।इसके मुख्य रूप निम्नलिखित है-

(1)कालवाचक- नया पोशाक, पुराना घर।
(2)स्थानवाचक- बनारसी साड़ी, नरोड़ा वासी।
(3)आकारवाचक- गोल मैदान, लंबा आदमी।
(4)दशावाचक- बूढ़ा आदमी,बिमार व्यक्ति।
(5)रंगवाचक- काला कृष्ण,गोरी राधा।
(6)गुणवाचक- सुंदर फूल,भला आदमी।

संख्यावाचक विशेषण-जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसके मुख्य दो भेद हैं-

(क)**निश्चित संख्यावाचक विशेषण**-एक,दो,तीन...
(ख)**अनिश्चत संख्यावाचक विशेषण**-कई,अनेक, बहुत...

संख्यावाचक विशेषण के निम्नलिखित उपभेद है-

(1)पूर्णांकबोधक- एक,दो, तीन,चार आदि।
(2)अपूर्णंकबोधक- आधा, पोना, सवा आदि।
(3)क्रमवाचक- पहला,दूसरा,तीसरा आदि।
(4)आवृत्तिवाचक- दुगुना,चौगुना,दसगुना आदि।
(5)समूहवाचक- दोनों, चारों आदि।

परिमाणबोधक विशेषण-जिस विशेषण से किसी वस्तु की नाप-तौल का बोध है, उसे परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। इसके मुख्य दो भेद हैं-

(क)**निश्चित परिमाणबोधक विशेषण**- एक मीटर कपड़ा,दो सेर दूध।

(ख)**अनिश्चित परिमाणबोधक विशेषण**- थोड़ा पानी, बहुत धन।

विशेष- अधिकांश विशेषण संख्यावाचक और परिमाणबोधक दोनों होते हैं।वे एक-वचन संज्ञा के साथ आकर परिमाण-बोधक हो जाते हैं और बहुवचन संज्ञा के साथ संख्यावाचक बन जाते हैं।जैसे--

परिमाण-बोधक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
1.हमारे घर में बहुत घी है।	उस कक्षा में बहुत विद्यार्थी हैं।
2.सब दूध फट गया।	सब पेड़ हरेभरे हैं।
3.आधा धन बाँट दो।	आधे सदस्य अनुपस्थित हैं।